

**मन में उठने वाले उद्वेगों की
शांति-सच्ची क्रांति**

इस दुनिया में सभी ने स्कूलों, कॉलेजों और यूनिवर्सिटी में जा करके गणित, भूगोल, समान शास्त्र, इतिहास का ज्ञान लिया, सुचनाएं लीं, उसके द्वारा परीक्षा भी दी और उत्तरों भी दिए। प्रश्नक भी प्राप्त किया। लेकिन मन में उठने वाले उद्देश्यों को शांत करने का ज्ञान सभी के पास नहीं है।

आज सभी बहुत सारी सुविधाएँ, बहुत सारी चीजें करते हैं। जिसमें जो अपने आपको प्रो महसूस करते हैं, या कहे स्वतंत्र महसूस करते हैं। स्वतंत्रता उनके जीवन में एक नया आयाम लेकर आई है। लेकिन जब वो रात में सोने जाते हैं या कभी अकेले बैठते हैं तो उस समय उनके मन में केवल एक प्रश्न उठता है कि व्यर्थ क्यों चल रहा है? नकारात्मक क्यों चल रहा है? इसलिए कहावत है जो कल में जीता है वो हमेशा विकल रहता है, माना व्याकुल रहता है। और जो दिन-रात परसों करता रहता है, तो उसके जीवन में हर चीज बरसी तक आने की मार्जिन कम हो जाती है। और जो आज में जीता है वहीं राज करता है। लेकिन आज तो स्वतंत्रता का मेन हमारा मुद्दा है।

आज हमारा है, माना हम परतंत्र है। लेकिन अगर मैं कल और परसों में जीवन को जी

खा है तो मैं परतंत्र हूँ। इसलिए परतंत्रता को परिभाषा बदल गई। पहले था कि हम किसी के दास थे, गुलाम थे, आज हम अपने मन-बुद्धि और संस्कारों के दास और गुलाम हैं। माना वर्षा संकल्पों के या नकारात्मक संकल्पों के गुलाम हैं। यह गुलामी बहुत ही भयावह स्थिति पैदा करती है। कहने का मतलब ये है कि हम ये बातें किसी से कह थोड़े सकते हैं।

हम थोड़ा बाहर घूम

आते हैं, किसी से मिल आते हैं, छोड़ी देर के लिए उस पर लेप लगा देते हैं और लगता है कि हमने आज के जीवन को आज जिया है लेकिन वो वहाँ भी बैठे-बैठे कल और पसरो के विचार आते रहते हैं।

तो स्वतंत्रता की जो परिभाषा है आज वो थोड़ी-सी अलग है। हमारे जो भी शरीर के साथ जुड़ी हुई चीज़ें हैं, जिनके लिए हम उतावले रहते हैं, इंतज़ाम करते हैं, चारों तरफ घूमते हैं, उसको खुश रखने की

कोशिश करते हैं और

उमी से सम्बन्धित विचार हमारे मन में भी आते हैं। तो विचार आने का मात्र एक भाव है और वो भाव है कि हमारा या तो व्यर्थ है या तो नकारात्मक है। तो परमात्मा ने हमारे जीवन में स्वतंत्रता को बढ़ाने का एक बहुत सहज और सरल तरीका बताया कि जो बीत गया उसको बिन्दी लगाओ और जो आने वाला है उसका बहुत ध्यान से स्वागत करो। और जो चल रहा है



- राजयोगी ब्र.कु. अनुज, दिल्ली

उसको खुश-खुश नियो।

तो स्वतंत्रता दिवस पर क्या हम एक दिवस नहीं मना सकते? हमको खुशी, शांति, प्रेम का एक दिवस उसके साथ जोड़ देना है, जो हमारे वर्तमान को तय करे, आज को तय करे, भविष्य को शक्तिशाली बनाए। और वर्तमान अगर हमारा आज तय हो गया तो भविष्य तो अच्छा होना ही है। इसलिए हम सभी मिलकर इन विकारों पर अगर एक साथ विजय प्राप्त करें तो हम रावण रूपी विकारों पर अवश्य विजय प्राप्त कर लेंगे। क्योंकि दुनिया में कोई किसी को परेशान नहीं कर रहा है। उसके संस्कार ही उसको तंग कर रहे हैं। और जो संस्कार हमने बनाए हैं उन संस्कारों की वजह से हमारे जीवन में इतनी सारी कड़वाहट आई है। और जो कड़वाहट हमें परेशान कर रही है।

तो चली उठते हैं, आगे की तरफ चलते हैं, और नये स्वतंत्रता दिवस को नये तरीके से अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करते हैं।



प्रश्न : मेला नाम रोहन है। क्या मेडिटेशन से दिकैक्टिव कलर विज्ञान को लोक किया जा सकता है? ये एक जैनेटिक डिजीज है और मेडिकल साइंस में इसका कोई भी ट्रीटमेंट नहीं है।

उत्तर : देखिए हम हमेशा से ही ये बात कहते आ रहे हैं मेडिकल साइंस

आजकल हर बीमारी को ठीक नहीं कर पा रही। मानसिक रोग तो ऐसे-ऐसे हो रहे हैं जिसमें मेडिकल साइंस तो कुछ कर ही नहीं पा रही है। बहुत सारी बीमारियां भी आजकल निकल गई हैं जिनका कोई इलाज हमारी मेडिकल साइंस के पास नहीं होता। पर इस स्मिचितुअल साइंस के पास होता है। बीमारियों का एक कारण पूर्व जन्मों के कर्म भी होते हैं। बीमारी का एक कारण मानसिक टेंशन भी रहती है। निगेटिव थिंकिंग भी रहती है। और कहीं न कहीं हर बीमारी इधर से बेन से ही शुरू हो रही है। बीज कहीं न कहीं मनुष्य के बेन में है। कहीं न कहीं मनुष्य का खान-पान भी ऐसा है, मनुष्य क्या-क्या खा रहा है उससे भी बीमारियां पैदा हो रही हैं। तो डॉक्टर लोग तो केवल वर्तमान रिज़न देखेंगे ना। लेकिन बीज कहाँ है ये हर डॉक्टर को पता नहीं चल सकता।

इसलिए स्मिरिचुआल पॉवर अपने में धरने से कई बीमारियां ठीक हो जाती हैं। इनको एक अपनी आँखों को प्युअर एनर्जी देनी होगी। एक ये अभ्यास करेंगे जो हम बहुत बार बताते हैं- हाथों को मलते हुए तीन बार ये अभ्यास करेंगे कि मैं परमपवित्र आत्मा हूँ और अपने हाथों को अपनी आँखों पर रखेंगे एक मिनट। फिर करेंगे प्युअर वायब्रेशन्स आँखों को जा रहे हैं और मेरी आँखों को नॉर्मल कर रहे हैं। जो भी ये डिफेक्ट है चिन् चिन् कलर्स का वो समाप्त हो रहा है। ऐसा आपको दस बार करना है। दूसरा अभ्यास, पानी को इसी संकल्प से चार्ज करेंगे कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। आधा गिलास पी लें और आधा गिलास आँखों

पर डिङ्क दें। तीसरा अभ्यास, ब्रेन को एनर्जी देगे। और इसके लिए संकल्प करेंगे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। तीन बार करके एक मिनट अपने मिर पर हाथ रखेंगे। एक-एक मिनट कर ऐसा दस बार करना है। और चौथा अभ्यास, विजुन बनाएंगे। विशेषकर रात को सोते समय और सुबह उठते ही मैं इस बीमारी से मुक्त हूँ। अब मान लो मैं फट रहा हूँ और दूर तक देख रहा हूँ। मुझे बिल्कुल क्लियर विजुन है कोई समस्या नहीं है।



संस्कृत-संज्ञा-सूचिका

मन की बातें

और साथ में इम्पैक्ट ये है कि एक घंटा पॉवरफुल राजयोग का अभ्यास मेडिटेशन करें। मेडिटेशन से वो विकर्म भी नाश होंगे जो बीमारी का मूल आधार बने हुए हैं। हमने किस जन्म में न जाने क्या किया है, किस पाप-कर्म के कारण हमारी विजुन में ये डिफेक्ट आ गया है। राजयोग ऐसी विद्या है जो धीरे-धीरे सोखनी होती है। क्योंकि मनुष्य का मन बहुत भटकता है। विद्या तो इतनी है कि आत्मिक स्वर्ण में स्थित होकर परमात्मा से अपना नाता जोड़े उसे

विजुअलाइज करो और उसको एनजी को रिसीव करो। उससे बात करो, उसका लव फील करो। उसकी शांति को अनुभव करो, उसकी शक्तियों को अनुभव में लाओ।

इसलिए हम सभी को राय देंगे और देते हैं कि हमारे सेवकेंद्रों पर जाकर 7 दिन का कोर्स अवश्य करें। ताकि जो ईश्वरीय ज्ञान है, प्रारम्भिक ज्ञान जो है वो आपको क्लियर हो जाये। तब रज्जयोग में और आनंद आण्ड और आपको पूरी नॉलेज मिलेगी कि मैं कौन हूँ, भगवान है कौन? इस संसार का चक्र क्या है? कर्मों की गूढ़ गति कैसी है? और रज्जयोग का सही-सही तरीका क्या है? हो सकता है समय लग जाये लेकिन तीन मास तक तो हम करने को अवश्य कहेंगे।

प्रश्न : मुझे ऐसा लगता है कि जैसे साथ में खड़े रह जाऊँ। कभी-कभी मैं भी वैसा ही बन जाता हूँ। तो फिर मैं क्या करूँ? जैसा होना चाहता हूँ।

आर : इसमें दो चीजें होती हैं, एक तो मानसिक योग भी हो सकता है और दूसरा ये सब जो है ब्लैक मैजिक का इफेक्ट भी हो सकता है। तंत्र-मंत्र का इफेक्ट लोग का देते हैं, दूसरे को परेशान करने के लिए। ऐसे में आपको किसी साइकैटिक को भी दिखा देना चाहिए। पूर्व जन्म में भी कुछ ऐसी घटनाएँ घटी हैं मनुष्य के साथ, सब्क्विशियस माइंड में बहुत बुरी तरह से जड़ गई हैं। उसका इफेक्ट भी रहता है। तो आपको अभ्यास ये करना है- खड़े उठकर आपको लिखना है 108 बार कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। शाम को भी लिखें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। लास्ट में गूड फ्रीलिंग के साथ, गूड

अवेयरनेस के साथ मैं इस बाधा से मुक्त हूँ। मैं बिल्कुल फ्रेश हूँ। मेरा तन भी बिल्कुल क्लोन है, फ्रेश है। मैं इस ब्लैक मैजिक के इफेक्ट से मुक्त हूँ, ऐसे संकल्प करों। सबसे भी 108 बार मास्टर सर्वशक्तियान का अभ्यास करें और रात को भी 108 बार। तो काफी मदद मिल सकती है। ऐसे में कई बार होता है मनुष्य कर नहीं पाता। क्योंकि ये ब्लैक मैजिक का इफेक्ट इतना बुरा होता है कि मनुष्य को मानसिक रूप से कमजोर कर देता है। तो इसमें चाहिए उनको कोई साथी, जो उसके साथ बैठे और कण्ठ कि लिखो। क्योंकि मनुष्य 10-20 बार लिख कर छोड़ देता है कि छोड़ो ये क्या है। कोई उसके साथ बैठे कि चलो पहले 21 बार लिखो, फिर 31 बार, 10-10 बढ़ाएं और ये संकल्प करें तो धीरे-धीरे उसमें रुचि पैदा हो जाएगी और सब ठीक होने लगेगा। अगर कोई मानसिक परेशानी है तो भी इससे निकल जाएगी और कोई ब्लैक मैजिक किया है तो भी इससे निकल जाएगा।

Contact e-mail - bikurys@yahoo.com

मान की खुशी और लक्ष्य लक्षित के लिए दोस्तों का साथ
आपका जीवन और खुशी और "आपका जीवन" के लिए

AWAKENING
The Brooding Kappa
TV Channel is available on:







Channel No.
1084

Channel No.
1060

Channel No.
578

Channel No.
996

Channel No.
984

For more details of the information, please contact the following:
 100, Sri Aurobindo Bhawan, Sector 10, Connaught Place, New Delhi - 110022
 011-26104000, 011-26104001, 011-26104002, 011-26104003, 011-26104004

CHANNEL NUMBER	
 Tata Sky	 Vodafone
 Airtel TV	 MNF Digital
 Tata Play	 Sun Doremi

For more details, please contact the following:
 100, Sri Aurobindo Bhawan, Sector 10, Connaught Place, New Delhi - 110022
 011-26104000, 011-26104001, 011-26104002, 011-26104003, 011-26104004